International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

अंग्रेजी शिक्षा के भारतीय समाज पर प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Surender
MA in History, MDU Rohtak
Reg. No. 03-CHM-200, Email : aryasiwach@gmail.com

शोध–आलेख सार : *कम्पनी शासन के अधीन अंग्रेजी शिक्षा का भारत में बहुत जोरों से विकास हुआ। जैसे–जैसे कम्पनी के शासन का विस्तार होता चला गया। वैसे–वैसे ही ब्रिटिश अधिकारियों को अंग्रेजी शिक्षा के विकास की आवश्यकता महसूस होती चली गई। उन्होंने प्रशासनीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अंग्रेजी भाषा की शिक्षा पर जोर दिया। इस विषय पर डॉ. मजूमदार ने भी लिखा है कि, 'अंग्रेजी भाषा के भारत में प्रचालित होने के कई कारण थे। उनके विचार से उदारवादी भारतीयों का ध्येय सार्वजनिक जीवन में सम्मान प्राप्त करना तथा नई चेतना ग्रहण करना था। उपयोगिता की दृष्टि से प्रशासन में ऊंची नौकरियां प्राप्त करना था जबकि दूसरी ओर ईसाई मिशनरी अंग्रेजी भाषा के पक्ष में थें, परंतु 1835 ई. में मैकाले के विवरण प् से यह बात स्पष्ट हो गई कि भारत में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होगा। लार्ड विलियम बैंटिक ने भी मैकाले के वर्क को स्वीकार किया और कहा कि आज के पश्चात् भारतीयों को ब्रिटिश साहित्य तथा विज्ञान की शिक्षा अंग्रेजी भाषा में प्रदान की जाएगी।'' इसके पश्चात् भारत में सरकारी, गैर सरकारी तथा ईसाई मिशनरियों द्वारा स्थापित स्कूलों तथा कॉलेजों की बाढ़ सी आ गई। 1857 ई. में मद्रास, बम्बई तथा कलकत्ता में लन्दन विश्वविद्यालय की तर्ज पर तीन विश्वविद्यालय स्थापित कर दिए गए। इस प्रकार ब्रिटिश सरकार के प्रयत्नों से भारत में अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने वालों की संख्या में दिन–रात वृद्धि होती चली गई।*

मुख्य–शब्द : कम्पनी शासन के अधीन, अंग्रेजी शिक्षा, ब्रिटिश साहित्य, विज्ञान की शिक्षा, ब्रिटिश सरकार।

शोध–प्रविधिः इस शोध–पत्र के लिए शोध सामग्री अधिकांश रूप में द्वितीयक स्रोतों से ग्रहण की गई हैं। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण के साथ–साथ शोधकर्त्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से प्राप्त की गई हैं।

भारत में अंग्रेजी शिक्षा के भारतीय समाज पर पड़े अच्छे तथा बुरे प्रभाव अथवा इसके गुण एवं दोष इस प्रकार थे–

1. भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना :–

भारत में अंग्रेजी भाषा लागू करने का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभाव यह पड़ा कि इससे भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न हुई। ब्रिटिश साहित्य में राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता की भावना पर बल दिया गया था। जब भारतीयों ने मिल्टन, वर्क, जॉन मिल, स्टुअर्ट मिल, हरबर्ट, स्पेन्सर, थॉम्स पेन आदि के उदार एवं स्वतंत्र विचारों को पढ़ा तो भारतीयों में भी स्वतंत्र एवं राष्ट्र के प्रति प्रेम के भाव जागृत हो गए। डॉ. ईश्वरी प्रसाद ने भी लिखा है कि, ''पश्चिम के राजनीति शास्त्र विशेषज्ञ लॉक, स्पेंसर और मैकाले, जेम्स मिल और बर्क के लेखों ने केवल भारतीयों के राजनीतिक विचारों को ही प्रभावित नहीं किया अपितु राष्ट्रीय आन्दोलन की रूपरेखा और संचालन पर भी प्रभाव डाला।''

2. राष्ट्रीय आंदोलन :–

भारत में अंग्रेजी शिक्षा लाकू हो जाने से भारतीयों में जहां एकता की भावना विकसित हुई वहीं पर अपने राष्ट्र को विदेशी शासन के चंगुल से मुक्त कराने की भी भावना विकसित हुई। भारतीयों ने सर्वप्रथम ब्रिटिश शासन के विरूद्ध 1857 ई. में कान्ति की। इसमें पढ़े–लिखे लोगों ने भी बढ़–चढ़कर भाग लिया। इसके पश्चात् 1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की गई। इसके नेताओं ने जो पाश्चात्य शिक्षा के ज्ञान से परिपूर्ण थे, भारतीय जनता से राष्ट्रीयता के भाव विकसित करने तथा उनको अपने साथ लेकर राष्ट्रीय आन्दोलन चलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन लोगों ने तब तक आंदोलन जारी रखा जब तक भारतीयों को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हो गई।

3. पुनर्जागरण आंदोलन :–

19वीं शताब्दी में पाश्चात्य शिक्षा के परिणामस्वरूप ही भारत में पुनर्जागरण आन्दोलन चला। राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवकानन्द आदि ने भारतीय धर्म तथा सामाजिक सुधार के लिए आंदोलन चलाया। वे एक

उच्चकोटि के सुधारक थे, जिन्होंने वेदों, धर्म ग्रन्थों, हिन्दू धर्म और संस्कृति को अपने विचारों का आधार बनाया और उन्होंने तर्क, समानता, स्वतंत्रता, भाईचारे की भावना का पक्ष लेते हुए असमानता, सामाजिक बुराइयों जैसे जाति–प्रथा, स्त्रियों की दयनीय स्थिति आदि का विरोध किया और इन बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया। राजा राममोहन राय अंग्रेजी भाषा के समर्थक थे। वे अंग्रेजों के विचारों एवं उनकी संस्कृति से पूर्णतया परिचित थे। स्वामी दयानन्द अंग्रेजी से अनभिज्ञ थे। वे भी शिक्षा के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों को समाप्त कर प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के मूल्यों को समाज में स्थापित करना चाहते थे। इसी प्रकार स्वामी विवेकानन्द भी आधुनिक शिक्षा प्राप्त थे। अतः आधुनिक शिक्षा के परिणामस्वरूप ही भारत में पुनर्जागरण आंदोलन चला। डॉ. सीताराम शर्मा के अनुसार ''भारतीयों ने अंग्रेजी भाषा पढ़कर उसके केवल उद्धान्त पक्ष को ही स्वीकार किया और यूरोपीय साहित्य एवं विज्ञान से प्रेरणा लेकर वे अपने समाज और धर्म की विसंगतियों और कुरीतियों को दूर करने में लग गएं इसी प्रक्रिया का स्वाभाविक परिणाम 19वीं शताब्दी के धार्मिक और समाज सुधार आंदोलनों के अतिरिक्त राष्ट्रीयता की भावना का विकास रहा।''

4. समाज सुधार :–

अंग्रेजी शिक्षा के विकास का सबसे बड़ा गुण यह निकला कि इसने भारतीय समाज की अनेक बुराइयों को समाप्त करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय समाज में एक लम्बे समय से प्रचलित सामाजिक कुरीतियों जैसे सती–प्रथा, कन्या वध, बाल विवाह आदि को समाप्त करने का श्रेय अंग्रेजी शिक्षा ही है। इसकी के परिणामस्वरूप विधवाओं को पुनर्विवाह की आज्ञा प्रदान की गई। आज भारतीय समाज में अस्पृश्यता में जितनी भी कमी आई है उसका सबसे अधिक श्रेय अंग्रेजी शिक्षा को ही जाता है, क्योंकि आधुनिक शिक्षा प्राप्त भारतीय नवयुवक इन सभी सामाजिक बुराइयों में विश्वास नहीं करते थे और इन्हें समाप्त करने में इन्होंने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

5. विज्ञान एवं तकनीक का विकास :–

भारत में अंग्रेजी शिक्षा के परिणामस्वरूप ही विज्ञान तथा तकनीक के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास हुआ। पाश्चात्य शिक्षा लागू हो जाने से भारतीयों ने यूरोपीय विज्ञान के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त की। भारतीय वैज्ञानिकों ने भी विज्ञान के क्षेत्र में नई–नई आधुनिक खोजें की। भारत में आधुपिक चिकित्सा शास्त्र पर भी बल दिया गया। बम्बई जैसे नगरों में मेडिकल कॉलेजों की स्थापना की गई। विज्ञान का ही सहारा लेकर विभिन्न उद्योगों में बड़ी–बड़ी मशीने लगाई गई। मशीनों के प्रयोग ने नए–नए व्यवसायों को जन्म दिया। कृषि के क्षेत्र में भी नई तकनीकी विधियां अपनाई गई। लोगों ने यूरोपीय आधार पर कृषि करनी आरंभ कर दी थी। यहां तक की गांवों तक भी कृषि के नए–नए यंत्र तथा सिंचाई के नवीनतम साधनों का प्रयोग आरंभ हो गया था।

6. भारतीय भाषाओं के साथ अन्याय :–

अंग्रेजी भाषा लागू हो जाने का सबसे बड़ा दोष यह निकला कि इससे भारतीय भाषाओं को जबरदस्त झटका लगा। संस्कृत, अरबी, फारसी, तमिल, बंगाली, मराठी, गुजराती आदि भाषाएं प्राचीन काल से ही बहुत प्रसिद्ध थी। इन भाषाओं में उच्च्कोटि के साहित्य भी लिखें गए थे, परंतु अंग्रेजी शिक्षा के साममे इन भाषाओं का महत्त्व पूरी तरह से समाप्त हो गया। 1835 ईऋ के पश्चात् प्राचीन भाषाओं के विकास पर सरकार ने ध्यान देना बिल्कुल बन्द कर दिया। ताराचंद के अनुसार, ''अंग्रेजी की प्रभुसत्ता भारतीय भाषाओं के विकास के मार्ग में रोड़ा बनी। जो शिक्षित भारतीय अंग्रेजी पढ़ते–लिखते और बोलते थे, वे बहुत दिनों तक अपनी मातृभाषा की अवहेलना करते रहे। यह सत्य है कि कुछ परिणाम में सभी भाषाओं में शक्तिशाली साहित्य उत्पन्न हुआ परंतु ज्ञान–विज्ञान, दर्शन, इतिहास बहुत कम रखा गया।'' अब प्राचीन भाषाओं अर्थात् संस्कृत अरबी या फारसी का स्थान अंग्रेजी भाषा ने ले लिया।

7. हिन्दू धर्म का प्रभाव :–

अंग्रेजी शिक्षा का हिन्दू धर्म पर भी बहुत प्रभाव पड़ा। अंग्रेजों ने अंग्रेजी शिक्षा की आड़ में ईसाई धर्म का भारत में जोरों पर प्रचार किया। ईसाई मिशनरियों ने सेरामपुर सहित अनेक स्थानों पर स्कूल एवं कॉलेजों की स्थापना की। इन शिक्षा संस्थाओं में केवल अन्य विषयों की ही शिक्षा प्रदान नहीं की जाती थी बल्कि ईसाई धर्म की शिक्षा भी प्रदान की जाती थी। इतना ही नहीं भारत के गरीबों, दलितों, बेरोजगारों को आर्थिक सहायता देने तथा नौकरियां देने का लालच दिया जाता था और उन्हें ईसाई धर्म अपनाने को कहा जाता था। यद्यपि भारतीयों द्वारा ईसाई धर्म ग्रहण करने वालों की बहुत कम थी परंतु इससे हिन्दू धर्म को बहुत धक्का लगा था। यहां तक कि अंग्रेजी भाषा के प्रभाव स्वरूप मूर्ति पूजा सहित अनेक परम्पराएं तथा बाह्याडम्बर कम होने लगे थे।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

8. भारतीय शिक्षा पर प्रभाव :–

अंग्रेजी शिक्षा का भारतीय शिक्षा पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। 1835 ई. में ब्रिटिश शिक्षा एक माध्यम के रूप में अनिवार्य कर दी गई। मैकाले ने अपने विवरण पत्र में प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति तथा साहित्य का बहुत मजाक उड़ाया। मैकाले ने अपने विवरण पत्र में लिख, ''जबकि हम इस भाषा (अंग्रेजी) में शिक्षा प्रदान कर सकते हैं तब क्या ऐसी भाषाओं को सिखलाएंगे जिनमें किसी भी विषय पर एक भी पुस्तक ऐसी नहीं है जिसकी तुलना हम अपने साहित्य से कर सकें। क्या हम ऐसे साहित्य एवं विज्ञान पढ़ाएंगे जो अत्यंत निम्नकोटि का है, क्या हम ऐसे चिकित्सा–शास्त्र का अध्ययन कराएंगे जिससे अंग्रेज पशु चिकित्सकों तक को लज्जा आएगी। ज्योजिष तो ऐसी है जिस पर स्कूलों को अंग्रेजी बालाएं हँस पड़ेगी और इतिहास ऐसा है, जिसमें 30 फीट लम्बे राजाओं का वर्णन है तथा भूगोल ऐसा है जिसमें क्षीर मक्खन के समुद्रों का वर्णन है।''

इसके अतिरिक्त जो नवयुवक अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करके आते थे वे अशिक्षित लोगों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते थे उनसे दूरियां बनाकर रखते थे। डॉ. ताराचंद ने भी लिखा है, ''अंग्रेजी शिक्षा से एक दुरंगापन पैदा हुआ। बुद्धि जीवी शिक्षित वर्ग अनपढ़ जनता से लगाव तो चाहता था परंतु मानसिक दृष्टि से उनसे अलगाव पैदा हुआ। इस दुरंगेपन का प्रभाव हम घरेलू और बाहरी दोनों प्रकार के जीवन में देखते हैं। हमारी राष्ट्रीय एकता में जो कमियां रहीं, उनकी जिम्मेदारी बहुत कुछ इसी कारण है। बौद्धिक ईमानदारी में अनिवार्य रूप से कुछ कमी आ जाती है। जब सार्वजनिक कार्य में एक भाषा नहीं होती, जब राष्ट्रीय एकता की भी हानि होती है। क्योंकि उस हालत में जनता के साथ एकता या आत्मीयता की भावना मद्धिम पड़ जाती है।''

9. भारतीयों के साथ अन्याय :–

ब्रिटिश शिक्षा का एक ओर भयानक प्रभाव यह पड़ा कि इसके द्वारा भारतीय पढ़े–लिखे नवयुवकों के साथ अन्याय हुआ। अंग्रेजी शिक्षा लागू हो जाने से भारतीय नवयुवकों ने भी उसमें रूचि दिखलाई। अब भारतीय भी अंग्रेजी डिग्रियां लेकर शिक्षा समस्याओं से बाहर आने लगे थे, परंतु ब्रिटिश सरकार उन्हें योग्यता के आधार पर नौकरियां प्रदान नहीं करती थी। भारतीयों में इसके प्रति असंतोष था। इसके अलावा अंग्रेज भारतीय को अपने से तुच्छ समझकर उनके साथ दुर्व्यवहार करते थे। उन्हें काले एवं हब्शी कहकर पुकारते थे।

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीय समाज को बहुत प्रभावित किया। इसके प्रभाव स्वरूप भारतीयों के आचार व्यवहार, रहन–सहन, पहनावे, खानपान आदि में बहुत परिवर्तन किया। इससे भारतीयों में राष्ट्र प्रेम की भावना भी जागृत हुई। डॉ. ईश्वरी प्रसाद के अनुसार, ''पश्चिम में राजनीति शास्त्र विशेष लॉक, स्पेंसर और मैकाले, जेम्स मिल और वर्क के लेखों ने केवल भारतीयों के राजनीतिक विचारों को ही प्रभावित नहीं किया अपितु राष्ट्रीय आंदोलन की रूपरेखा और संचालन पर भी गहरा प्रभाव डाला।''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. Dharam Kumar (Ed.), The Cambridge Economic History of India, Vol. II
2. Dodwell, H.H. (Ed.), The Economic History of India, Vol. VI.
3. Dutt, R.C., The Economic History of India, 2 Vots.
4. Grover, B.L., Curzon and Congress (I.C.H.R.).
5. Iibert, C.P., The Government of India.
6. Spear, Percival., The Oxford History of India.
7. Strachey, John, India Its Administration and Progress.
8. Dayal B., The Development of Modern Indian Education (1953).
9. Mukerjee, S.N., History of Education in India (1957).
10. Nurullah and Naik, History of Education in India during the British Period (1956).

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

11. Report of the Radhakrishanan Commission on University Education (1949).
12. Report of the Kothari Education Commission (1966)
13. Basu, Aparna, Growth of Education and Political Development in India. 1895-1920.
14. Challenge of Education a Policy Perspective, 1985.